3

भारतीय समाज में नृजातीय, धार्मिक, भाषायी व क्षेत्रीय समस्याएँ

[ETHNIC, RELIGIOUS, LANGUAGE AND REGIONAL PROBLEMS IN INDIAN SOCIETY]

"भारतीय संस्कृति में विविधता के प्रमुख आधार नृजातीय उद्भव, धर्म तथा भाषाएँ हैं।"

—डॉ. श्यामाचरण दुबे

भारतीय समाज या संस्कृति एक रंगी साड़ी नहीं, बहुरंगी चुनरी है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि भारतीय संस्कृति में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक तत्वों का एक अनुपम समन्वय देखने को मिलता है। इन विविधताओं से भारतीय समाज व संस्कृति का कोई बेढंगा रूप सामने नहीं आया है, अपितु उसकी सौन्दर्य वृद्धि ही हुई है। भारतीय संस्कृति में, जैसा कि हम जानते हैं, दूसरों के सांस्कृतिक तत्वों को आत्मसात करने और अपने भीतर उनको उपयुक्त स्थान प्रदान करने की अद्भुत शक्ति है। यही कारण है कि यवन, शक, हूण, मुसलमान और अंग्रेज आदि कितने ही विदेशी सांस्कृतिक समूहों का भारत में प्रवेश हुआ। इन सभी की संस्कृति एक-दूसरे से बहुत अधिक भिन्न थी; फिर भी भारत में इन विदेशी संस्कृतियों को निःसंकोच ग्रहण किया और उन्हें अपने साथ मिला लिया। इस प्रकार समय की माँग के अनुसार विभिन्न संस्कृतियों के विभिन्न तत्वों को आत्मसात करके भारत ने अपने को क्षुब्ध नहीं किया, अपितु अपनी सम्पन्नता को ही बढ़ाया। भारत ने उन सभी सांस्कृतिक तत्वों को ग्रहण किया, जिन्हें ग्रहण किया जा सकता था। इसी ग्रहणशीलता के कारण ही भारतीय समाज (व संस्कृति) आज भी चिर-नूतन, चिर-सक्रिय तथा चिर-निरन्तर बना हुआ है और उसमें इतनी विशालता, व्यापकता तथा विविधता देखने को मिलती है। आइये, इन विविधताओं का अध्ययन किया जाये—

(1) भौगोलिक विविधताएँ (Geographical Diversities)

एशिया के अन्तर्गत भारत एक विस्तीर्ण प्रायद्वीप है, जिसका आकार विषमबाहु-चतुर्भुज के समान प्रतीत होता है। यह देश अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण एशिया के दूसरे भागों से बिल्कुल पृथक् हो गया है। मोटे तौर पर देखा जाय तो कहा जा सकता है कि इसका क्षेत्रफल रूस को छोड़कर समस्त यूरोप के क्षेत्रफल के बराबर तथा ग्रेट ब्रिटेन के क्षेत्रफल का बीस गुना है। इतने बड़े देश में भौगोलिक भिन्नताओं का होना स्वाभाविक ही है। भारत में यदि एक ओर बर्फ से ढँकी हुई व आकाश को छूती हुई पर्वतों की चोटियाँ और हिमालय की लम्बी व ऊँची पर्वत-श्रेणियाँ हैं, तो दूसरी ओर समुद्र की लहरों से खेलते हुए, विस्तृत, उपजाऊ मैदान हैं। यदि एक ओर राजस्थान का शुष्क मरुस्थल है—जहाँ मीलों मानव का नाम तक नहीं है, तो दूसरी ओर सिन्धु-गंगा का वह मैदान भी है जहाँ मानव-जीवन के असंख्य दीप नित्य जल-बुझ रहे हैं। भारतभूमि में जहाँ एक ओर हिन्दुओं की पापमोचनी गंगा की लहरें ईश्वरीय आशीर्वाद की भाँति, देखने को मिलती हैं, वहाँ दक्षिण की कुछ ऐसी नदियाँ भी हैं जिन्हें कि केवल वर्षा में ही जल-प्लावित होने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इस देश में न केवल पहाड़ों और नदियों में ही भिन्नताएँ हैं, अपितु मिट्टी तक में विविधताएँ हैं। यहाँ दोमट और कछारी, काली और लाल विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं।

2) जलवायु की विविधताएँ (Diversities in Climatic Conditions)

भारत की जलवायु में भी भिन्नताओं की अपूर्वता देखने को मिलती है। यहाँ उष्ण, शीतोष्ण और शीत तीनों प्राकार की जलवायु पाई जाती है। यदि एक ओर हिमालय प्रदेश की, हड्डियों तक को कंपा देने वाली सर्दी है तो दूसरी ओर झुलसा देने वाली राजस्थान के रेगिस्तान की गर्मी भी है। कोंकण और कोरोमण्डल तट पर नमी और

Scanned with CamScanner

गर्मी दोनों ही हैं। यदि एक ओर दक्षिण के शुष्क पथरीले पठार की सूखी जलवायु है तो दूसरी ओर पश्चिम बंगाल व मालाबार की आर्द्र जलवायु और मालवा की समशीतोष्ण जलवायु भी है। जहाँ एक ओर असोम, पश्चिम बंगाल, हिमालय के दक्षिण-पूर्वी ढाल तथा मालाबार तट पर वर्ष में 200 सेमी. से अधिक वृष्टि होती है वहाँ दूसरी ओर कच्छ, राजस्थान व पंजाब के दक्षिणी भाग में 50 सेमी. से भी कम वर्षा होती है।

(3) प्रजातीय या नृजातीय विविधताएँ (Racial or Ethnic Diversities)

कहा जाता है कि भारत प्रजातियों का एक अजायबघर (Museum of Races) है। इस देश में बहुत नाटे कद वाले नीग्रिटो प्रजाति के लोग रहते हैं और लम्बे कद वाले नार्डिक प्रजाति के लोग भी। यहाँ पीले या भूरे रंग वाले मंगोल लोग रहते हैं और चॉकलेटी रंग वाले प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड प्रजाति के लोग भी। जहाँ एक ओर लम्बे सिर वाले भूमध्य सागरीय प्रजाति के लोग निवास करते हैं, वहाँ दूसरी ओर चौड़े सिर वाले आल्पाइन प्रजाति के सदस्य भी यहाँ रहते हैं। इस प्रकार इस देश में नीग्रिटो, प्रोटो—ऑस्ट्रेलायड, मंगोलॉयड, भूमध्यसागरीय, आल्पाइन, डिनारी, आर्मीनॉयड, नार्डिक आदि प्रजातियों का महामिलन हुआ है। भारतीय समाज में कौन-कौन सी प्रजातियाँ पाई जाती रही हैं—यह निम्नलिखित वर्णन से स्पष्ट होगा—

I. रिजले का वर्गीकरण (Classification by Risley)

सर रिजले ने भारतवर्ष में सात प्रजातीय का उल्लेख किया है। वे निम्नलिखित हैं[1]—

1. तुर्को-ईरानियन (Turko-Iranian)—बिलोचिस्तान के बलोच और ब्राहुई लोग एवं उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त के अफगान इसी प्रजाति के लोग हैं। ये लोग तुर्की और ईरानी तत्त्वों के सम्मिश्रण हैं। औसत से ऊँचा कद, गोरा रंग, प्राय: काली, पर कभी-कभी घूसर (grey) आँखें, चौड़ी सिर, नाक लम्बी और बाल अधिक इस प्रजाति के मुख्य शारीरिक लक्षण हैं।

2. इण्डो-आर्यन (Indo-Aryan)—इस प्रजाति के लोग पंजाब, राजपूताना और कश्मीर में पाए जाते हैं। इनके मुख्य शारीरिक लक्षण निम्न हैं—कद प्राय: ऊँचा, रंग गोरा, आँखें काली, चेहरे पर बाल घने, सिर लम्बा, नाक पतली और सुन्दर, पर अधिक लम्बी नहीं।

3. सीथो-द्राविड़ियन (Scytho-Dravidian)—इस प्रजाति के लोग मध्य प्रदेश, सौराष्ट्र और कुर्ग के पहाड़ी क्षेत्रों में अधिकतर पाए जाते हैं। इसके मुख्य प्रतिनिधि गुजरात के नागर ब्राह्मण, महाराष्ट्र के मराठा बाह्मण और कुर्गवासी कुर्ग हैं। इस प्रजाति का निर्माण सीथियन और द्रविड़ तत्त्वों के सम्मिश्रण से हुआ है। इनकी मुख्य शारीरिक विशेषताएँ निम्न हैं—चौड़ा सिर, गोरा रंग, दाढ़ी-मूँछ का कम उगना, मध्यम कद, नाक सुन्दर, पर अधिक लम्बी नहीं।

4. आर्यो-द्राविड़ियन (Aryo-Dravidian)—इस प्रजाति के लोग पंजाब की पूर्वी सीमा, उत्तर प्रदेश, राजपूताना और बिहार के कुछ भागों में पाए जाते हैं। यह आर्य-द्राविड़ प्रजातियों का एक सम्मिश्रण है। इस कारण उच्च जातियों में इस प्रजाति के लोगों की विशेषताएँ बहुत-कुछ आर्यों की भाँति और निम्न जातियों में द्राविड़ों की भाँति हैं। इनका लम्बा सिर, मध्यम कद और रंग हल्के भूरे से काले तक होता है। नाक इण्डो-आर्यन लोगों से अधिक चौड़ी होती है, पर कद उनसे कम होता है।

5. मंगोलो-द्राविड़ियन (Mongolo-Dravidian)—इस प्रजाति के लोग बंगाल और उड़ीसा में पाए जाते हैं। यह प्रजाति मंगोल और द्राविड़ से मिलकर बनी है। इनका रंग काला, सिर चौड़ा, नाक मध्यम, कभी-कभी चपटी, कद मध्यम और चेहरे पर बाल घने हैं।

6. मंगोलॉयड (Mongoloid)—इस प्रजाति के लोग अधिकतर उत्तर-पूर्वी भारत में पाए जाते हैं, जैसे नेपाल और आसाम। इनका सिर चौड़ा, रंग पीला, दाढ़ी-मूँछ के बहुत कम बाल, कद छोटा या औसत से कम, नाक पतली से चौड़ी, चेहरा चौरस और आँखों की पलकें झुकी हुई होती हैं।

7. द्राविड़ियन (Dravidian)—इस प्रजाति के लोग मद्रास, हैदराबाद, मध्य प्रदेश के दक्षिणी भाग और छोटा नागपुर में पाए जाते हैं। इनके सर्वोत्तम प्रतिनिधि दक्षिणी भारत की पहाड़ियों के पनियन और छोटा नागपुर के संथाल हैं। इनका कद छोटा, रंग बहुत काला, बाल अधिक और घुँघराले, आँखे काली, सिर लम्बा और नाक बहुत चौड़ी होती है।

---

1 H. H. Risley, *The People of India*, 1915, pp. 32–61.

Scanned with CamScanner

II. हड्डन का वर्गीकरण (Classification by Haddon)

श्री हड्डन के अनुसार भारत की जनसंख्या में निम्नलिखित प्रजातियाँ देखने को मिलती हैं—

(1) प्राग्-द्राविड़ (Pre-Dravidian),
(2) द्राविड़ (Dravidian),
(3) इण्डो-आल्पाइन (Indo-Alpine),
(4) मंगोल (Mongolian),
(5) इण्डो-आर्यन (Indo-Aryan),

III. हट्टन का वर्गीकरण (Classification by Hutton)

श्री हट्टन के मतानुसार भारतवर्ष की जनसंख्या में निम्नलिखित प्रजातीय तत्त्व पाए जाते हैं—

(1) नीग्रिटो (Negrito),
(2) प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड (Proto-Australoid),
(3) भूमध्यसागरीय (Mediterranean),
  (क) पूर्व भूमध्यसागरीय (East Mediterranean),
  (ख) भूमध्यसागरीय (Mediterranean),
(4) आल्पाइन प्रजाति की आर्मीनॉयड शाखा (Armenoid branch of Alpine),
(5) मंगोलॉयड (Mongoloid),
(6) इण्डो-आर्यन (Indo-Aryan),

IV. डॉ. गुहा का वर्गीकरण (Classification by Dr. Guha)

डॉ. गुहा ने भारत की प्रजातियों का निम्नलिखित रूप में प्रस्तुतीकरण किया है—

(1) नीग्रिटो (Negrito),
(2) प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड (Proto-Australoid),
(3) मंगोलॉयड (Mongoloid),
(i) प्राचीन मंगोलॉयड (Palaeo-Mongoloid),
  (क) लम्बे सिरे वाले (Long-headed),
  (ख) चौड़े सिर वाले (Broad-headed),
(ii) तिब्बती मंगोलॉयड (Tibeto-Mongoloid),
(4) भूमध्यसागरीय (Mediterranean),
(i) प्राचीन भूमध्यसागरीय (Palaeo-Mediterranean),
(ii) भूमध्यसागरीय (Mediterrancean),
(iii) पूर्वी-प्ररूप (Oriental Type),
(5) पश्चिमी चौड़े सिरे वाले (Western Brachy Cephalic),
(i) आल्पाइन (Alpinoid),
(ii) डिनारी (Dinaric),
(iii) आर्मीनॉयड (Armenoid),
(6) नॉर्डिक (Nordic)।

डॉ. गुहा प्रजातियों के सम्बन्ध में कुछ संक्षिप्त विवरण उपयोगी सिद्ध होगा—

1. **नीग्रिटो** (Negrito)—यह नीग्रो प्रजाति की एक शाखा है जिसका कद बहुत नाटा होता है। इस उप-प्रजाति के लोगों की अन्य शारीरिक विशेषताएँ चौड़ा सिर, गहरा काला रंग, काले ऊनी बाल, मोटे होंठ और चौड़ी नाक हैं। डॉ. गुहा के अनुसार यह भारत की सबसे पुरानी प्रजाति है और इसके कुछ चिह्न कोचीन तथा ट्रावनकोर की पहाड़ियों में रहने वाली कादर और पलयन नामक जनजातियों में, आसाम के अंगामी नागाओं में और पूर्वी बिहार की राजमहल की पहाड़ियों की जनजातियों में मिलते हैं।

Scanned with CamScanner

2. **प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड** (Proto-Australoid)—इस प्रजाति के लोगों के सिर लम्बे, कद छोटा, बाल घुँघराले, खाल का रंग चॉकलेटी, नाक चौड़ी और होंठ मोटे होते हैं। इनके बालों का रंग काला और आँखों का रंग काला और भूरा होता है। मध्य भारत की अधिकांश जनजातियाँ इसी प्रजाति की हैं। दक्षिण भारत में भी ये लोग पाए जाते हैं। भील और चेनचू जनजातियाँ इसी प्रजाति की मानी जाती हैं।

3. **मंगोलॉयड** (Mongoloid)—इस प्रजाति के लोगों की प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ पीला या भूरा रंग, चपटा चेहरा, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई, नाक छोटी और चपटी, सिर चौड़ा और हौंठ मोटे होते हैं। भारत में इस प्रजाति की दो मुख्य शाखाएँ हैं—प्रथम शाखा प्राचीन मंगोलॉयड है। इनमें लम्बे सिर और चौड़े सिर, यह दो भेद होते हैं। लम्बे सिर वाले आसाम और सीमान्त प्रान्त में बसी जनजातियों में और चौड़े सिर वाले चटगाँव तथा बर्मा में पाये जाते हैं। दूसरी शाखा तिब्बती मंगोलॉयड है। ये लोग सिक्किम और भूटान में तिब्बत से आकर बस गये हैं।

4. **भूमध्यसागरीय** (Mediterranean)—इस प्रजाति के लोगों की सामान्य विशेषताएँ निम्न हैं—मध्यम कद, लम्बा सिर, हल्का भूरा रंग, चौड़ा मुँह, पतले होंठ और घुँघराले बाल। भारत में इसकी तीन शाखाएँ हैं, पर सभी लम्बे सिर वाले हैं। इन तीन शाखाओं में सबसे पुरानी उप-प्रजाति प्राचीन-भूमध्यसागरीय है जोकि कन्नड़ तामिल तथा मलयालम भाषा-भाषी प्रदेशों में पाई जाती है। दूसरी शाखा भूमध्यसागरीय है जो पंजाब और गंगा की ऊपरी घाटी में मिलती है, और तीसरी शाखा पूर्वी-प्ररूप है जो पंजाब, सिन्ध, राजपूताना और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पाई जाती है।

5. **पश्चिमी चौड़े सिर वाले** (Western Brachy Ceplialic)—भारतवर्ष की जनसंख्या में इस प्रजाति के भी तीन प्रकार हैं। पहला प्रकार आल्पाइन (Alpinoid) है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण शारीरिक लक्षण चौड़ा सिर है। इसके अतिरिक्त मध्यम कद, नाक छोटी, पर ऊँची और खाल का रंग पीलेपन के साथ भूरा होता है। यह गुजरात में विशेष रूप से पाई जाती है और मध्य भारत, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में भी कहीं-कहीं मिलती है। इस प्रजाति की दूसरी शाखा डिनारी (Dinaric) है। यह बंगाल, उड़ीसा, काठियावाड़, कन्नड़ और तामिल भाषा-भाषी प्रदेश में मिलती है। कुर्ग में इस शाखा का सबसे शुद्ध रूप मिलता है। इस प्रजाति की तीसरी शाखा आर्मीनॉयड है। बम्बई के पारसी लोग इस शाखा के ही प्रतिनिधि हैं।

6. **नॉर्डिक** (Nordic)—इस प्रजाति के लोगों के प्रमुख शारीरिक लक्षण लम्बे सिर, ऊँची और पतली नाक, लम्बे कद, पतले होंठ, बाल सीधे और साधारण घुँघराले तथा रंग गोरा या गेहुँआ होता है। इस प्रजाति के लोग सिन्धु नदी की ऊपरी घाटी तथा स्वात, पंचकोटा, कुनार, चितराल नदियों की घाटियों में और हिन्दुकुश पर्वत के दक्षिण में मिलते हैं। ये काश्मीर, पंजाब और राजस्थान में भी फैले हुए हैं।

उपर्युक्त विवेचना से एक बात स्पष्ट ही है कि भारत की जनसंख्या के निर्माण में एक नहीं, अनेक प्रजातियों का योग रहा है। ये विभिन्न प्रजातियाँ विभिन्न समय में भारत में आई और एक-दूसरे से मिश्रित होती रहीं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि भारत की सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि इनमें से प्रत्येक प्रजाति को इसमें कोई-न-कोई स्थान मिल ही गया और वे यहाँ के सम्पूर्ण सामाजिक ढाँचे की एक अभिन्न अंग बन गई; इससे उनको आपस में सम्मिश्रित होने के अधिक अवसर प्राप्त हो सके। ऐसी परिस्थिति में किसी भी प्रजाति के लिए यह सम्भव न था कि वह अपने शुद्ध रूप को बनाए रखे। यही कारण है कि आज संसार के अन्य देशों की भाँति भारत में भी कोई विशुद्ध प्रजाति नहीं है। इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि "स्मरणातीत युगों से भारत परस्पर विरोधी प्रजातियों और सभ्यताओं का संगमस्थल रहा है और इनमें आत्मसात्करण तथा समन्वय की प्रक्रियाएँ चलती रही हैं।" इसी कारण यह कहने में भी अतिशयोक्ति न होगी कि "भारत प्रजातियों का एक अजायबघर है" (India is a museum of races) या "भारत प्रजातियों का एक द्रावणपात्र है।"

Scanned with CamScanner